have recommended that leave of absence may be granted to the following Members for the periods indicated in the Report: Shri S. C. Chowdhury, Shri P. R. Ramakrishnan, Shri Hoover Hynniewta, H. H. Maharaja Pratap Keshari Deo, Shrimati Lalita Rajya Laxmi, Shri B. Rajagopala Rao, Shri Bhagwan Din Misra, Shri Muthuramalinga Thevar, Shri K. G. Deshmukh, Shrimati Tarkeshwari Sinha, Shri Awadhesh Kumar Singh, Shri K. N. Singh, Dr. K. Atchamamba, Shri I. Eacharan, Shri V. C. Shukla, and Shri C. R. Narasimhan.

I take it that the House agrees with the recommendations of the Committee.

Hon. Members: Yes.

Mr. Speaker: The Members will be informed accordingly.

BUSINESS OF THE HOUSE

The Minister of Parliamentary Affairs (Shri Satya Narayan Sinha): With your permission, Sir, I would like to announce that the order of business for the House for the week commencing 3rd March, 1958 will be as follows:

(1) Further discussion of the Railway Budget.

(2) Discussion and voting on Supplementary Demands for Grants 1957-58 in respect of Railways.

(3) Discussion and voting on Demands for Grants 1958-59 in respect of Railways.

(4) Consideration and passing of the Control of Shipping (Continuance) Bill, 1958.

(5) Discussion on the Seventh Report of the Union Public Service Commission for the year 1956-57 and the Government's memorandum thereon on a motion to be moved by Sarvashri Harish Chandra Mathur and N. R. Munisamy.

RAILWAY BUDGET—GENERAL DISCUSSION—*contd.*

Mr. Speaker: The House will now resume further discussion on the Railway Budget. Out of 15 hours allotted for the discussion, 9 hours and 29 minutes have already been availed of and 5 hours and 31 minutes now remain. Shri Raghunath Singh may continue his speech.

श्री रघुनाथ सिंह (वाराणसी) : अध्यक्ष महोदय, जब श्री शाहनवाज साहब इस सदन में सवालों का जवाब देते हैं, तो मालूम पड़ता है कि ट्रेन की स्पीड बहुत तेज है और बहुत तेजी के साथ ट्रेन जाती है, लेकिन अगर हम ट्रेन पर सवार हों, तो वह बहुत स्लो चलने लगती है और दो दो, तीन तीन घंटे लेट होती है । १९३८–३९ में मालगाड़ी की रफ्तार ११ मील प्रति घण्टा थी और आज बीस बरस के बाद उसकी रफ्तार ८.३६ मील प्रति घटा हो गई है । एफ़िशेन्सी यह है कि बीस बरस में माल गाड़ियों की स्पीड दो घंटा कम हो गई है । इस के पश्चात् इंजिन को देखें । १९३८–१९३९ में लाइन पर चलने वाले इंजिनो की सख्या ५,२४७ थी और रिपेयर होने वाले इंजिनो की संख्या ९८९ थी । आज लाइन पर चलने वाले इंजिन ५,८३३ है और रिपेयर होने वाले ९२० हैं । इससे स्पष्ट है कि जहां तक इंजिनों का ताल्लुक है, इन बीस बरसों में एफ़िशेन्सी ज्यादा नहीं बढ़ी है ।

सवारी गाड़ी को लीजिए। १९३८-३९ में सवारी गाड़ी के ९८०७ डिब्बे थे, जबकि बीस बरस के बाद आज ८५५६ डिब्बे है । बीस बरस के बाद आज, जबकि ट्रैफ़िक में बहुत ज्यादा वृद्धि हो गई है, डिब्बों की संख्या कम हो गई है ।

रेलवे उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) इन बीस बरसों में पाकिस्तान भी बना ।